ब्रज लोकगीतों में जीवन, संस्कृति एवं देशज ज्ञान: एक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा से

हिन्दी विषय में पी.एच.डी. उपाधि हेतु शोध-प्रबंध की

प्रस्तावित रूपरेखा

शोध छात्रा

पूनम यादव

शोध निर्देशक

बृजराज कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग, कला संकाय
दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा 280005

2023

शोध विषय का परिचय

भारतीय साहित्य में 'लोक' शब्द का प्रयोग प्राचीन काल से हो रहा है। यह शब्द संस्कृत की 'लोक दर्शने' धातु में 'धञ' प्रत्यय जोड़ने से निर्मित हुआ। इस धातु का अर्थ है देखना। लोक शब्द की प्राचीनता के विषय में कोई सन्देह नहीं है, क्योंकि साधारण जनता के अर्थ में इसका प्रयोग ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर किया गया है। इसी में लोक शब्द के लिए जन शब्द का प्रयोग भी मिलता है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है- **"लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं है,बल्कि नगरों और गाँव में फैली हुई वह समस्त जनता है जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है।"**

लोकसाहित्य के मूर्द्धन्य विद्वान **डॉ॰ सत्येन्द्र** ने "जनपद शब्द को क्षेत्रीय संकीर्णता का बोधक बताया है और लोक शब्द को व्यापकता का बोध कराने वाला कहा है। लोक शब्द के साथ लोकमंगल, लोकरंजन, लोकल्याण, लोकन्याय जैसे अन्य शब्द जुड़े हुए है, उनमें लोक का जो अर्थ ध्वनित होता है, वह लोक साहित्य से कुछ भिन्न है। लोकसाहित्य का लोक शब्द उस क्षेत्र में पहुँच गया है या पहुँचा दिया गया है जहाँ अभिजात वर्ग या शिक्षित वर्ग का प्रवेश नहीं अर्थात् लोक शब्द का अर्थ ग्रामीण जनता ग्रामीण अंचल या अशिक्षित जन तक सीमित कर दिया गया है।" **डॉ॰ सत्येन्द्र** ने लोक शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है, और जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है।

सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाली अपनी सहज अवस्था में जो निरक्षर जनता है उसकी आशा- निराशा, हर्ष- विषाद, जीवन- मरण, लाभ- हानि आदि की अभिव्यक्ति जिस साहित्य में होती है,उसे लोकसाहित्य कहते हैं।

रवीन्द्र भ्रमर ने लिखा है, "लोकसाहित्य लोक मानस की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। यह बहुधा अलिखित ही रहता है और अपनी मौखिक परम्परा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ता रहता है। इस साहित्य में रचयिता का नाम प्रायः अज्ञात रहता है। लोक प्राणी जो कुछ कहता है सुनता है उसे समूह की वाणी बनाकर और समूह में घुला- मिलाकर ही कहता है। सम्भवतः लोकसाहित्य लोकसंस्कृति का वास्तविक प्रतिबिंब भी होता है। अभिजात परिष्कृत या लिखित साहित्य के प्रतिकूल लोकसाहित्य परिमार्जित भाषा, शास्त्रीय रचना पद्धति

और व्याकरणिक नियमों से मुक्त रहता है। लोकभाषा के माध्यम से लोकचिन्ता की अकृत्रिम अभिव्यक्ति लोक साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है। लोकसाहित्य पोथी ज्ञान से विलग रहने वाले लोकमानस की अभिव्यक्ति है।

लोकसाहित्य की विधाओं को विशेषताओं, लक्षणों के आधार पर ही एक-दूसरे से अलग करते है, यहाँ भी लोकसाहित्य को जानने-पहचानने की आवश्यकता महसूस हुई, इन्ही लक्षणों के आधार पर ही लोक साहित्य को शिष्ट या परिनिष्ठित साहित्य से पृथक किया जा सकता है:-

1. लोक साहित्य का कोई निश्चित रचनाकार नहीं होता है, यह अधिकतर समूह में गाया जाता है।

1. लोकसाहित्य किसी एक निर्धारित काल क्रम में विकसित नहीं होता यह पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता है।
2. लोकसाहित्य अलिखित एवं अप्रकाशित होता है, लेकिन समाज में निरंतर गतिमान रहता है।
3. लोकसाहित्य का कोई निश्चित व्याकरण नहीँ होता, बोली स्थानीय पुट लिए रहती है।

यहाँ हम ब्रज के लोकगीतों में ब्रज जीवन का अध्ययन करेंगे।

लोकगीतः लोकगीत लोक मानव के व्यक्तिगत और सामूहिक सुख-दुख की लयात्मक अभिव्यक्ति होते हैं। लोक कथा की भाँति यह भी लोक कंठ की मौखिक परम्परा की धरोहर और मानस की विविध चिंतन धाराओं के कोष माने गये हैं। जैसे-जैसे संस्कृति और भाषा का विकास, हुआ उसने तुकात्मक पद्यबद्ध वाक्यों के माध्यम से अपने अनुभव एवं ज्ञान को आने वाली पीढ़ी को सौंपने का उपक्रम किया। लोक से गीत, संगीत, लय, तान, साहित्य, अनुभव का स्रोत फूटा जो शिक्षा का प्रारंम्भिक स्वरूप था, स्त्रियों का कृषि- संस्कृति के विकास में अभूतपूर्व योगदान है।वह बीज बोते हुए, फसल काटते हुए, शारीरिक श्रम करते हुए, पानी भरते हुए,परस्पर समूह में बात करते हुए गीत आदि के माध्यम से तनाव, चिन्ता, थकान दूर कर लेती थीं, इसलिए इन गीतों का मनोवैज्ञानिक महत्व भी है।

डॉ॰ मैनेजर पाण्डेय के अनुसार **"लोकगीतों का अस्सी प्रतिशत सम्बन्ध स्त्रियों के साथ होता है मनुष्य संकटों के बीच जीने का रास्ता खोजता है। इस रास्ते में कला और साहित्य संजीवनी की तरह है।"** मध्य प्रदेश की करमा जाति के गीतों में उल्लेख है कि ’यदि तुम मेरे जीवन की सच्ची कहानी जानना चाहों तो मेरे गीतों को सुनो।

ब्रज का प्रथम प्रयोग ऋग्वेद सहिंता में मिलता है जो पशु समूह के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। **दीनदयाल गुप्त** ने ब्रज मंडल का अर्थ गोलाकार लगाते हुए मथुरा को केंद्र मानकर चौरासी कोस के बहाने से एक परिधि खींच दी है और इसे ही ब्रज मंडल मान लिया है।यही भारत का मध्य देश है जिसे मनु ने अत्यंत भाग्यशाली बताया है। ब्रजभाषा का प्रसार उत्तर प्रदेश के मथुरा, अलीगढ़, आगरा, बुलंदशहर, एटा, मैनपुरी बदायूं तथा बरेली के जिले, पंजाब के गुरूग्राम, राजस्थान में भरतपुर, करौली, धौलपुर, जयपुर का पूर्वी भाग, मध्य भारत में ग्वालियर का पश्चिमी भाग आदि स्थानों पर है।

बात ब्रज की हो तो कृष्ण से जुड़ी बातों का स्मरण न हो ऐसा हो ही नहीं सकता। हालांकि सभी देवी-देवताओं पर ब्रज में लोकगीत है, लेकिन कृष्ण की जन्मभूमि है ब्रज क्षेत्र इसलिए कृष्ण के व्यक्तित्व की झाकियाँ ब्रज लोकगीतों में अधिक मुखरित हो उठी है। लोकगीत कई विषयों पर होते है - जैसे पारिवारिक सम्बन्धों पर आधारित, धार्मिक व नैतिक राजनीतिक, आर्थिक (चक्की, कृषि, गोचारण) प्रकृति, ऋतु सम्बन्धी, शैक्षिक, मनोरजंनात्मक (होली मेले ठेले, हास्य, टेसू, झाँझी) विवाह, बच्चे के जन्म आदि विषयों पर लोकगीत ब्रज में प्रचलित हैं। **ब्रज में शिशु का जन्म ले**ते ही सोहर गीतों से सारा घर आँगन गूँज उठता है, इसके उपरांत नामकरण, मुण्डन, छठी, कर्णछेदन, आदि गीतों की फुहारें पड़ती रहती हैं। विवाह के अवसर पर तो सारा वातावरण ही संगीतमय हो उठता है। ढोलकी और मजीरों की ध्वनि पर नारी कंठ से फूटे ये गीत रात के सन्नाटे में प्राण संचार करते हैं।ब्रज के संस्कार गीतों को मुख्यतः छः भागों में विभक्त कर सकते हैं। विवाह गीत, जन्म गीत, मुण्डन, यज्ञोपवीत, गौनागीत मृत्युगीत आदि। विवाह के दौरान जब दूल्हा बारात लेकर निकलते हैं तो इसे निकरौसी कहते हैं इस दौरान घर की बुजुर्ग महिलाएँ बरना, बरनी गाती है-

उदाहरण:-

मोरे बन्ने को कोई मत देखो।
नजरिया लग जाएगी।।
सीस बन्ने के सेहरा सोहे।
कलगी पै नजरिया लग।।
अंग बन्ने के जामा सोहे।
पटुके पे नजरिया लग जाएगी।।
संग बन्ने के डोला सोहे।
बन्नी को नजरिया लग जाएगी।।

इधर ब्रज में अनूठा रस बरस रहा है शुभ मुहुर्त है।आज कन्या पक्ष के लोग लगन लेकर आए है, निराली साज सज्जा है। बाबा, ताऊ, बाबुल, चाचा, मैया सभी सज गए है और वर उनमें तो साक्षात् राम की छवि साकार हो उठी है-

रघुनन्दन फूले न समाय।
लगुन आयी हरे-हरे लगुन आई मेरे अंगना।
रघुनन्दन फूले न समाय।
बाबा सज गए ताऊ सज गए।।
सज गई सबरी बारात।
रघुनन्दन तो ऐसे सज गए जैसे सिरी भगवान।।
लगुन आई मेरे अंगना।

परिवार समाज की बड़ी महत्वपूर्ण संस्था है।स्त्री पुरूष और बच्चों के इर्द-गिर्द विविध सामाजिक सम्बन्धों के रूप में अस्तित्व ग्रहण करता है। पिता का अपनी संतान के प्रति प्रेम सहज एवं स्वभाविक होता है। पुत्री को पराया धन मानते हुए पिता उसे विशेष प्रेम एवं वात्सल्य देता है। पुत्र भारतीय संस्कृति में पिता को पितृ ऋण से उऋण कराने वाला, वंश परम्परा को जीवित रखने वाला एक महत्वपूर्ण सदस्य होता है।

मन मेरो जे कहै धिया जनमियों मोरे गज बज आवे बारात।
लटकत आवें मोरे साजना विहंसत दूल्हा दामाद
घर मेरों रीतों आंगन मेरो रीतों अब सुख रीतो मेरो पेट
मन यों कहै पुत्र जनमियों मोरे गजबज जै हैं बारात
घर मेरो भरि गयो आंगन मेरो भरि गयो
सब सुख भरि गयो पेट, बेटा बू लैके आइयों
धन मोरी कोख सुलच्छनी, जिन मेरो राखौ है मान

इस गीत में स्त्री कह रही है कि यदि पुत्री हुई तो वह शादी होकर दूसरे घर चली जाएगी सामान भी साथ ले जाएगी।मेरा घर खाली हो जाएगा।पुत्र होगा तो बहू और दहेज दोनों से ही मेरा घर संर्वागपूर्ण हो उठेगा।इस लोकगीत में दहेज लेना- देना सामाजिक मान- सम्मान का आधार बताया गया है। आज भी समाज में यह मानसिकता व्याप्त है।सभी सम्बन्धों पर ब्रज में लोकगीतों का वर्णन है। परिवार और इससे इतर जितने भी सम्बन्ध हैं, उनमें पति पत्नी का सम्बन्ध अनूठा ही है। उनमें दाम्पत्य जीवन के स्नेहपूर्ण सम्बन्धों के अनेक संदर्भ ब्रज के लोकगीतों में स्थान-स्थान पर मिलते है। श्रृंगार विवाह का प्रथम सोपान पत्नी का सौन्दर्य और मन का उत्साह पति का सन्निध्य पाकर द्विगुणित हो जाता है।

गोरी कै कजरा जब खुलें जब बालम निरखै आई
मुख भरि वतियाँ तब खुले जब बालम हँस बतराई
बाजने बिछिया तब खुले जब बालम निरखै चाल।

हर्ष-विषाद, सुख-दुःख आशा निराशा, लड़ाई-प्यार जैसी विपरीत मनःस्थितियों को दाम्पत्य जीवन के सम्बन्धों में अभिव्यक्त करते हुए लोकगीतकारों ने सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक दृष्टि का परिचय दिया है।

ब्रज प्रांत के गाँव में फेरी वाले मधुर कंठ से अपनी वस्तु को बेचने का प्रचार करते हैं। वे कभी बाँसुरी ढोलक बजाते हुए, मन के विचारों को लयात्मक अभिव्यक्ति देते हुए,खरीददारों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।ब्रज लोकगीतों से आर्थिक तथा व्यापार की स्थिति का खूब पता लगाया जा सकता है। स्थान विशेष वस्तु जो ख्याति प्राप्त है आदि की जानकारी सहजता से प्राप्त हो जाती है।

मैं तौ गई रे हाथरस मंडी,
मैंने एक जने पे देखी
मेरो बाई दिना ते जिया ललचाय
तगड़ी सोने की देउ मंगवाय।

यह आर्थिक स्थिति का स्तर है जो स्त्रियों की सोच तथा उनके लिए काम्य वस्तुओं की प्राथमिकता के रूप में उभरा है। इस तरह देख सकते हैं कि स्वयं को जीवित रखने की इच्छा ही आर्थिक विकास का कारण बनी है। ब्रज में आर्थिक विकास के सूत्र खोजे जा सकते हैं।

पर्यावरण प्रकृति का अनूठा वरदान है। पर्यावरण ने मानव को क्या नहीं दिया वायु, जल, धरती, झरने, नदियाँ, पर्वत, जलाशय, कुएँ, वृक्ष, वनस्पतियाँ, फल, पुष्प आदि सभी आ जाते हैं। इन्हें देखकर मानव मन्त्रमुग्ध हो उठता है। सृष्टि का सुन्दर आकर्षण है प्रकृति और यह मानव के जीवन का अविछिन्न अंग है। मानव ने वायु से गति,पर्वतों से तप, बादलों से दानशीलता, झरने से संगीत, कल-कल करती सरिताओं से जीवन जीने की ललक सागर से गाम्भीर्य वृक्षों से लोककल्याण और पुष्पों से आत्मोत्सर्ग और समर्पण की भावना ली वह मोहित हो गया प्रकृति पर और उसके अधरों से लोकगीत मुखरित हो उठे। पर्यावरण जीवन का मूलभूत आधार है, तो लोकगीत मानव मन के उद्गार है जिसमें रस ही रस है माधुर्य है और लालित्य। इन लोकगीतों में जीवित है हमारी संस्कृति प्रकृति के प्रति निष्ठा और आस्था। प्रकृति के कण-कण में व्याप्त देवी-देवताओं की छवि को देख मानव अभिभूत हो जाता है और वह

प्राकृतिक उपकरणों की पूजा, अर्चना, उपासना बड़े मनोयोग से करता है। वेदों में नदियों का महात्म्य वर्णित है नदियाँ देवी मानी जाती है। इनकी पूजा अर्चना विधिवत् होती है मन की यही आस्था और विश्वास ही तो पर्यावरण को संतुलित और सुरक्षित रखता है। आदि युग से ही प्रकृति ने मनुष्य को संरक्षण दिया है उसके व्यक्तित्व को बनाया है, जिसमें वृक्षों का सर्वाधिक योगदान रहा है। लोक विश्वास है कि वृक्षों में जीवन तथा इनमें देवी-देवताओं का वास है- तभी मानव वृक्षों की पूजा अर्चना करता है पीपल, बरगद, गूलर, आम, आँवला, तुलसी, बेल, नीम, केला आदि की पूजन विधि वैदिक ग्रन्थों में सहजता के साथ देखने को मिलती है।

हरियल हरियल मैया मेरी मत करै रे,
ए जी कोई हरौ रे जौ कौ खेत
हरी रंगाय दे मैया मेरी चुनरी री

प्रकृति का हरा रंग देख कर, जौ के खेतों का हरा रंग देख कर नारी मन चुनरी को हरी रंगने के लिए ललायित हो उठा है।

ब्रज प्रदेश का प्रसिद्ध लोकगीत है रसिया तथा होरी।। 'होरी' ब्रज में होली के अवसर पर गायी जाती है। किवदन्तियों के अनुसार माना जाता है कि कृष्ण और राधा के द्वारा ही होली पर्व का शुभारम्भ किया गया था। मथुरा में आज भी फूलों की होली, लठ्ठमार होली, गुलाल, कीचड़ आदि की होली होती है। वृन्दावन में बंसत पंचमी से ही होली की तैयारियाँ शुरू हो जाती है। वहाँ टेसू के फूल से रंग बनाया जाता है प्रेम से पगी वाणी में ब्रजवासी होली का आनन्द लेते हैं।

लोकगीत का इतना व्यापक क्षेत्र है कि इन्हें किसी सीमा में, वर्ग में बांधना अत्यंत कठिन है राष्ट्रीय गीत, चरखा गीत ,खेलकूद, मनोरंजन गीत, बालगीत आदि सभी में अनोखा माधुर्य है ये मानवता को अविच्छिन्न बंधन में बाँध देते हैं।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं, कि इस शोध प्रस्ताव के माध्यम से समस्त ब्रजधाम के लोकगीतों में जीवन पद्धति, कला संस्कृति और देशज ज्ञान परंपरा का अध्ययन किया जायेगा।

शोध विषय की आवश्यकता एवं महत्त्व

लोक साहित्य का समाज में अपना विशिष्ट महत्व है। भारत में ब्रिटिश शासन के औपनिवेशिक, शोषक तथा स्वरूप का प्रभाव लोक पर भी पड़ा।, जहाँ उसने अपनी रागात्मक चेतना को गीतों के माध्यम से वाणी दी वहीँ उसके ह्रदय से क्रांतिकारी चेतना भी प्रचंड रूप से प्रवाहित हुई पूँजीवादी समाज से जूझना भी लोक के लिए बड़ी चुनोती थी। जनसंस्कृति की अभिव्यक्ति का एक रूप लोकसाहित्य होता है लोकसाहित्य में लोकजीवन का रस ही समाज़ की जड़ों को सींचता है। आज हम जिन मानव मूल्यों की पड़ताल कर रहे हैं, उनका अक्षय स्त्रोत लोक जीवन व लोकसंस्कृति ही है।

शोध विषय से सम्बन्धित अन्य शोध कार्य

विविध विश्वविद्यालयों में अनेक शोधकर्ताओं ने ब्रज लोकोत्सव, ब्रज गीतों आदि से सम्बन्धित पहलुओं पर शोध किए हैं। जो निम्न प्रकार हैं-

1. ब्रजक्षेत्र के लोकगीतों का समाजशास्त्रीय अध्ययन: मोनिका (छत्रपति शाहू जी विश्वविद्यालय, 2009)
2. हरियाणवी और ब्रजलोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययनः दिलबाग (कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, 2011)
3. ब्रज मण्डल के लोकोत्सव एवं लोक संगीत का अध्ययनः अंजलि (विश्वविद्यालय वनस्थली विद्यापीठ, 2017)

उपर्युक्त शोध प्रबन्धों में ब्रज के लोकगीतों का तुलनात्मक और समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है, परन्तु शोध छात्रा द्वारा चयनित विषय 'ब्रजभाषा के लोकगीतों में ब्रज जीवन' जीवन पद्धति, कला संस्कृति, एवं देशज ज्ञान परंपरा का, ब्रज के जीवन के यथार्थ को समग्र दृष्टि जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं भाषिक दृष्टि से देखने का प्रयास किया जाएगा। शोध छात्रा द्वारा प्रस्तावित शोध विषय सर्वथा मौलिक एवं नवीन है।

शोध विषय का उद्देश्य

प्रस्तावित शोध का मुख्य उद्देश्य ब्रज के सम्पूर्ण जीवन को लोकगीतों के माध्यम से अनछुए पहलुओं को उजागर करना होगा। भारत जो कि अपनी अनूठी संस्कृति के लिए पहचाना जाता है। लोकगीतों में निहित देशज ज्ञान परंपरा,

अनुभव, सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने का प्रयास इस शोध प्रबंध के माध्यम से किया जायेगा।

शोध की उपयोगिता

प्रस्तावित विषय **'ब्रज लोकगीतों में जीवन, संस्कृति एवं देशज ज्ञान: एक अध्ययन'** करना शोध का विषय है। प्रस्तुत शोध में लोकगीतों के माध्यम से सम्पूर्ण ब्रज जीवन पर प्रकाश डाला जायेगा, जो भारतीय संस्कृति को भलीभांति जानने वाले जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। लोक की अभिव्यक्ति क्षमताएँ विविध प्रकार की है। लोक की सर्वाधिक वैविध्य पूर्ण अभिव्यक्ति लोकगीतों में है, कारण है कि गीत लयबद्ध होने के कारण स्मरण रखने में आसान होते हैं। मानव आदिकाल से अपनी रागात्मक भवनाओं की भाषा गत अभिव्यक्ति गीतों कहानियों के माध्यम के द्वारा करता आया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध के माध्यम से उपरोक्त विशेषताओं और ब्रज लोकगीतों में संचित ज्ञान, परंपरा, अनुभव आदि का संम्यक अध्ययन किया जाएगा, जिससे आगामी जीवन में उनका उपयोग हो सके।

शोध कार्य की प्रविधियाँ

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा ब्रज जीवन का गहन अध्ययन किया जायेगा। साथ ही वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक,क्षेत्रीय अध्ययन द्वारा स्थायी रूप से ब्रज में निवास करने वाले लोगों के साक्षात्कार के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया जाएगा।

रूपरेखा

अध्याय 1   ब्रजभाषा की व्यापकता, लोकभाषा, एवं लोकसाहित्य परिचय

- ब्रज साहित्य और संस्कृति की विकास परम्परा
- ब्रजभाषा और उसका व्यापक क्षेत्र
- ब्रज में लोक संस्कृति के विविध आयाम(लोकगीत, लोक नाटक, लोककथा, लोकगाथा)
- लोकसाहित्य का महत्व

अध्याय 2 ब्रज लोकगीतों का वर्गीकरण

- संस्कार संबंधी गीत
- ऋतु, संबंधी गीत
- व्रत ,पर्व, त्योहार संबंधी गीत
- श्रम संबंधी गीत
- विविध गीत

अध्याय 3 ब्रज लोकगीतों में कृषि संस्कृति एवं विविध पेशेगत शब्दावली

- ब्रज लोकगीतों में किसान जीवन का चित्रण
- ब्रज लोकगीतों में कृषि- व्यापार संबंधी लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे
- ब्रज लोकगीतों में विविध पेशेगत शब्दावली का प्रयोग
- दैनिक जन जीवन के क्रिया व्यापार संबंधी गीत

अध्याय 4 ब्रज लोकगीतों में स्वाधीन चेतना एवं औपनिवेशिक गुलामी से मुक्ति के संघर्ष की अभिव्यक्ति

- राष्ट्रीय चेतना एवं औपनिवेशिक गुलामी से मुक्ति का संघर्ष
- 1857 विद्रोह संबंधी गीत
- ब्रज लोकगीतों में स्वतंत्रता आंदोलन की अभिव्यक्ति
- साम्राज्यवाद विरोधी चेतना की अभिव्यक्ति

अध्याय 5 ब्रज लोकगीतों में देशज ज्ञान परंपरा एवं नीतिपरक अनुभव

- उपदेश एवं आचार- विचार संबंधी गीत
- भक्ति एवं नीति संबंधी गीत
- पारिस्थितिकीय चिंता संबंधी गीत
- स्त्री जीवन संबंधी गीत
- विस्थापन गीत

अध्याय 6 : ब्रज लोकगीतों का शिल्पगत वैशिष्ट्य

- भाषा का लालित्य
- मुहावरे एवं कहावतें
- शाब्दिक संरचना
- गीति तत्व

उपसंहार

- परिशिष्ट
- अधार ग्रंथ
- संदर्भ ग्रंथ
- पत्र- पत्रिकाएँ
- साक्षात्कार
- वेबसाइट

नोट:- शोध निर्देशक की सलाह एवं निर्देश से शोध रूपरेखा में 20 प्रतिशत परिवर्तन संभव है।

संदर्भ सूची

आधार ग्रंथ

क्र.सं.	ग्रन्थ	रचनाकार	प्रकाशन	संस्करण
1.	ब्रज के लोकगीत एवं लोकपर्वों का संगीतिक अध्ययन	डॉ. वंदना तैलंग	हिन्दी पुस्तक केंद्र दिल्ली	2015
2.	ब्रज लोक साहित्य और लोकसंस्कृति	डॉ. रामशरण गौड	अनिल प्रकाशन, दिल्ली	2016
3.	ब्रज के लोकगाथाओं विश्लेषण एवं भाषिक चिंतन	डॉ शेफाली चतुर्वेदी	कल्पना प्रकाशन दिल्ली	2018
4.	ब्रज लोकगीतों में रस योजना	डॉ. चन्द्रमोहन	मेखला प्रकाशन	2019
5.	ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन	डॉ. सत्येन्द्र	साहित्य कुंज आगरा	1957
6.	ब्रजभाषा	धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद	1954
7.	ब्रजलोक संस्कृति	डॉ. सत्येन्द्र	ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा	2005
8.	ब्रज लोकसाहित्य नव चिंतन	डॉ शेफाली चतुर्वेदी	कल्पना प्रकाशन दिल्ली	2011
9.	ब्रज सहित्य का ऋतु सौंदर्य	प्रभुदयाल मीतल	साहित्य संस्थान मथुरा	1966

10.	लोकसाहित्य में राष्ट्रीय चेतना	डॉ शांति जैन	प्रभात प्रकाशन दिल्ली	2017

सहायक ग्रन्थ

क्र. सं.	ग्रंथ	रचनाकार	प्रकाशन	संस्करण
1.	जीवन में लोक विज्ञान	वसंत निरगुणे	सुभद्रा पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर, दिल्ली	2016
2.	ब्रज की लोककथायें:एक अध्ययन	डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी दीपक	वृन्दावन शोध संस्थान वृन्दवन	1995
3.	ब्रज के लोकगीतों का यौन मनोविश्लेषण	डॉ. रामसिंह प्रभात	प्रकाशन, दिल्ली	
4.	ब्रज लोक वैभव	मोहन लाल मधुकर	राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर	
5.	ब्रज संस्कृति और लोकसंगीत	लक्ष्मी नारायण गर्ग	संगीत कार्यालय हाथरस उत्तर प्रदेश	2009
6.	लोकसाहित्य का लोकतत्त्व	डॉ. रामनिवास शर्मा	निर्मल पब्लिकेशन दिल्ली	2003
7.	लोकसाहित्य एवं लोक संस्कृति	उषा सक्सेना	राजभाषा प्रकाशन	2007
8.	लोक संस्कृति की रूपरेखा	कृष्णदेव उपाध्याय	लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद	2009
9.	लोकसाहित्य की भूमिका	कृष्णदेव उपाध्याय	लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद	2019
10.	हिन्दी की मौलिक और लोकसाहित्य परम्परा	डॉ. अनिरूद्ध कुमार सुधांशु	श्री नटराज प्रकाशन	2019